

Dr. Tapati Mukerjee
 Associate Professor
 (Music)
 Date: 30-05-2020

Steady Material for B.A Part III (100) (1)

Paper 5th Theory
 + Pract.

Topic: Raga Parichay.

Raga - Deshkar

Compare with Bhimpali

"ठाठ बिलावल में जवै,
 मंगि की द्विपै निहार
 घ-ग वढी - सम्बाही ते
 औडव हैसीकार"

राग देशकार की उत्पत्ति बिलावल धातु में माना गया है। इस राग में मुख्यतया निषादि स्वर लम्बुनी रूप में वर्जित है। जिसके कारण इस राग भी जाति औडव-औडव है। वाकि सब स्वर शुद्ध प्रयोग किए जाते हैं, कोही स्वर खंखर स्वर तथा लम्बाही स्वर गांधार है। यह राग पारिवेशन को समझ दिखे द्वितीय प्रहर है।

लेकिन कुछ संगीत विद्वानों के बीच इस राग का गान लम्बुनी को लेकर मत विरोध है कुछ संगीत विद्वानों का मानना है इस राग की गान लम्बुनी प्रहः काल है।

सकप्रकृति राग - श्रुपाली तथा जौं कलपाया

आलि स्वर - षड्ज, पंचम खंखर तथा वाद षड्ज

आरीह - सा, रे, ग प ध ला

आवरीह - सा, ध प, ग ध प, गरीला

पकड़ - ध प, ग प गरी, ग प,

आलाप - सा॥३३३३धु३३सा॥ ३ ३ ३ (सा), ग३३प३३ग३३

३३३३ सा॥ ग३३३३ध३३३३ग३३ध३३ध३३ध३३३३

ग३३ध३३प, ग३३ध३३सा॥ ३३३३सा॥ ग३३ग३३

सा३३३३ ३३३३ ध३३३३ सा॥ ३३३३प३३ग३३ध३३ध३३

ग३३ध३३ग३३ ३३३३सा॥ ग३३ध३३ध३३ध३३

ग प ।

आका (ने धा नो गरी मने)

देशकार तथा भूपाली में तुलना

- समानता - ① राग देशकार तथा भूपाली दोनों रागों में ही सभी स्वर शुद्ध प्रयोग किया जाता है,
 ② दोनों रागों के आरोह-उत्तराह में मध्यम तथा निषाद स्वर वर्जित हैं।
 ③ दोनों रागों के आरोह-उत्तराह एक ही ढंग में होते हैं यानी -
 आरोह प चो तां । तो व्यप ग रे । ता ।
 ④ दोनों रागों में ही वड़ा (ध्रुव) और छोटा (ध्रुव) तथा सितार आदि तंत्र वाद्यों में गले बजाया जाता है।

विभिन्नता

राग देशकार

- ① देशकार राग की उत्पत्ति ~~विभिन्न~~ विलावल धातु से भोजा गया है।
 ② राग देशकार के वाली स्वर ध्रुवत तथा लम्बाही स्वर गोंप्याल है।
 ③ राग देशकार के चलन मध्यम लक्षक से ता लक्षक के पंचम स्वर तक गाया जाता है, इसकी प्रकृति चंचल है।

राग भूपाली

- ① राग भूपाली की उत्पत्ति कुल्याण धातु से भोजा गया है।
 ② जबकि राग भूपाली के वाली स्वर गोंप्याल तथा लम्बाही स्वर ध्रुवत है।
 ③ राग भूपाली की चलन मंजू तथा मध्य लक्षक में अपेक्षित होता है इसकी प्रकृति गम्भीर है।

देशकार

हमोत्रिका	तां	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप
द्वितीया	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप
तृतीया	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप
चतुर्थी	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप
पंचमी	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप	गप	व्यप